बेकी

एक बहरी लड़की की कहानी

करेन हिरश

चित्र: जो एस्को

बेकी

एक बहरी लड़की की कहानी

करेन हिरश

चित्र: जो एस्को

बेकी सुन नहीं सकती थी. जब वो एक बच्ची थी, तो उसे एक बीमारी हो गई थी जिसने उसे बहरा बना दिया था. अपने हियरिंग-एड से भी बेकी केवल बड़ी, तेज आवाजें ही सुन पाती थी. वो हमारी आवाज बिल्कुल नहीं सुन सकती थी.

बेकी मेरी पार्ट-टाइम बहन है. वो सोमवार से शुक्रवार तक हमारे परिवार के साथ रहती है ताकि वो स्कूल जा सके. उसके एक असली माँ, पिताजी और भाई-बहनें हैं, और जब स्कूल की छुट्टी होती है तो वो उनके साथ रहने जाती है. वे सभी एक फार्म पर रहते हैं.

बहुत पहले जब मुझे पता चला कि बेकी हमारे साथ रहने आ रही है तो वो बात मुझे पसंद नहीं आई.

"उसे यहाँ क्यों रहना है, माँ?" मैंने पूछा. "मैं घर में कोई ऐसा बच्चा नहीं चाहती हूँ जिसे मैं नहीं जानती हूं."

"मैंने बहरे लोगों के बारे में अखबार में एक लेख पढ़ा है," मेरी माँ ने कहा. "उसमें लिखा था कि गांव के बच्चों के लिए शहरों में घरों की सख्त जरूरत है, और हमारे पास एक अतिरिक्त कमरा है." फिर माँ ने मुझे गले लगाया. "तुम चिंता मत करो. तुम जल्द ही उसे जान जाओगी."

मैं इतनी निश्चित नहीं थी. वो अतिरिक्त कमरा मेरे भाई और मेरा खेलने का कमरा था. अब वो बेकी के लिए एक बेडरूम बना दिया गया था. हममें से किसी को भी यह बात पसंद नहीं आई. और भला मैं उसे कैसे जान सकती थी? वो तो बहरी थी.

पर जब मैंने पहली बार बेकी को देखा तो मैं हैरान रह गई. यह दो साल पहले की बात है. मुझे लगता था कि वो अन्य लोगों से बिल्कुल अलग दिखेगी. लेकिन वहां वो अपनी जींस और टी-शर्ट और लंबी पोनीटेल में किसी अन्य लड़की की तरह ही दिख रही थी.

अगस्त का महीना था, जब वो अपने माता-पिता के साथ हमारे परिवार से मिलने आई. वो पहले तो डर गई. मैं भी डर गई. लेकिन उसके माता-पिता और मेरे माता-पिता के कुछ समय मिलने के बाद, बेकी और मैंने एक-दूसरे को देखा. मुझे विश्वास नहीं हो रहा था कि वो बहरी थी. फिर मैं कमरे में गई.

"क्या तुम खेलना चाहती हो?" मैंने उससे पूछा.

उसने कोई उत्तर नहीं दिया. उसने ठीक मेरी तरफ देखा और वो थोड़ा सा मुस्कुराई. लेकिन वो कुछ नहीं बोली. मुझे बहुत अजीब लगा. मुझे नहीं पता था कि मुझे क्या करना चाहिए. इसलिए मैं कमरे से बाहर निकल आई.

बेकी स्कूल खुलने के एक दिन पहले हमारे साथ रहने आई. वो अपने माता-पिता और अपने पांच भाई-बहनों के साथ एक कार में आई. उन सभी ने बेकी का सामान उतारने में मदद की. मैंने उसे गैरेज से देखा.

बेकी बिल्कुल नहीं मुस्कुराई. उसके बड़े भाई ने उसे दो बार गुदगुदी की, और उसकी छोटी बहन ने उसे टॉफी दी. सभी ने उसे गले लगाया और उससे अलविदा कहा. लेकिन बेकी बिना हिले-डुले वहीं खड़ी रही.

मुझे लकड़ी के ढेर पर एक फ्रिसबी मिली और मैं उसे बाहर लेकर गई.

"क्या तुम खेलना चाहती हो?" मैंने पूछा. मैंने फ्रिसबी को ऊपर उठाया ताकि वो मुझे समझ सके.

हमने थोड़ी देर फ्रिस्बी खेली. फिर मैंने अपने स्टिल्ट ढूंढे और बेकी को उन पर चलने में मदद की. बेकी उन पर तुरंत चलना सीख गई. इससे पहले कि वो गिरती, वो ड्राइववे में नीचे गई और फिर वापस आई.
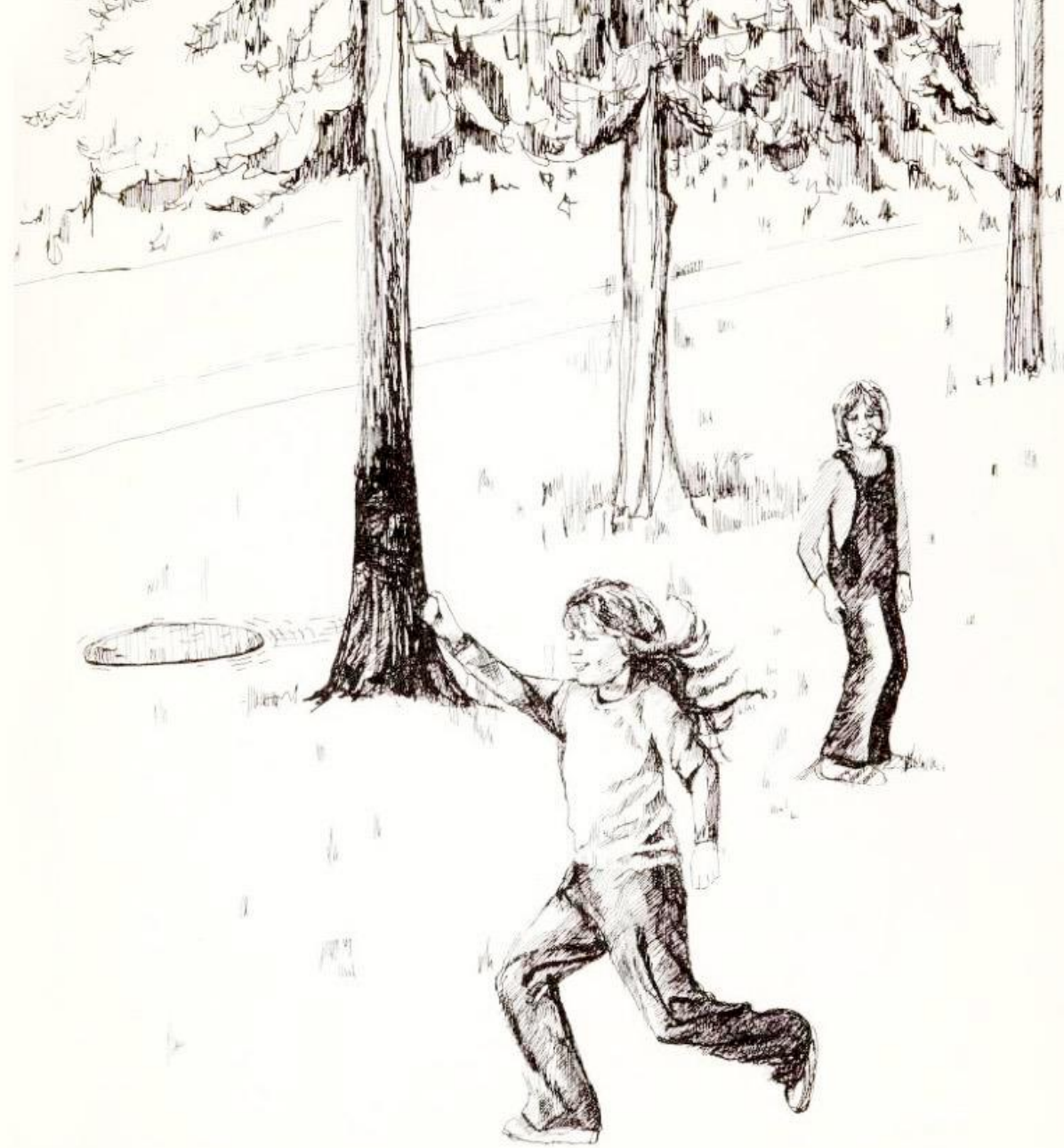
फिर उसने ठीक मेरी तरफ देखा और वो मुस्कुराई. उसने अपनी जैकेट की जेब में हाथ डाला और एक लंबे फंदे में बंधी एक मजबूत डोरी निकाली. उसने अपने हाथों में डोरी डाली और वो उसे इधर-उधर घुमाने लगी. उसने डोरी से एक सुंदर क्रॉस डिजाइन और एक ज़िग-ज़ैग का नमूना बनाया. मैंने वैसी चीज पहले कभी नहीं देखी थी.

फिर बेकी ने डोरी उतारी और मुझे थमा दी. वो मुस्कुराई और उसने फिर डोरी की ओर इशारा किया. मैं डोरी का खेल खेलना चाहती थी, लेकिन मुझे नहीं पता था कि वो कैसे खेला जाए. मैंने अपने कंधे उचकाए. बेकी ने डोरी मेरे हाथों पर रखी और मुझे दिखाया कि मुझे क्या करना चाहिए.

मेरे लिए बेकी का आसपास होना वास्तव में अच्छा था. खासकर बरसात के दिनों में. फिर हम चित्र बनाते या जिम्नास्टिक करते थे. कभी-कभी हम कठपुतलियाँ बनाते थे या फिर पिताजी की चॉकलेट केक बनाने में मदद करते थे. हमने डोरी के खेल भी खेले. बेकी ने मुझे ढेर सारे डिज़ाइन बनाकर दिखाए. कुछ हमने एक-साथ मिलकर बनाए.

"इसे कैट्स-क्रैडल कहते हैं," मेरी माँ ने कहा जब मैंने उन्हें उस खेल के बारे में बताया जो बेकी ने मुझे सिखाया था. "यह एक बहुत पुराना खेल है, और उसमें सभी डिज़ाइनों के अलग-अलग नाम हैं."

जिस एक चीज में हमें परेशानी होती थी वो थी बातचीत करने में. फिर बेकी ने स्कूल में सांकेतिक भाषा सीखनी शुरू की. उसने अपने हाथों से बात करना सीखा. उसने शब्दों को हिज्जे करके बताना सीखा, और उसने एक समय में पूरे शब्द भी बताना सीखे. मेरे माता-पिता ने भी साइन-लैंग्वेज सीखी और उन्होंने मुझे भी साइन-लैंग्वेज सिखाई. इससे बहुत मदद मिली क्योंकि तब हम सभी लोग बेकी से बात कर सकते थे.

बेकी ने होठ पढ़ना सीखना भी शुरू किया. हम बिल्कुल उसके सामने देखकर बोलते थे और उस समय सांकेतिक भाषा में बात भी करते थे.

कभी-कभी स्कूल के बाद बेकी मेरे और मेरे दोस्तों के साथ किकबॉल और इक्कड़-दुक्कड़ खेलती थी. आमतौर पर यह खेल ठीक चलते थे, लेकिन कभी-कभी मैं बेकी पर गुस्सा हो जाती थी.

जब किसी खेल के नियम कठिन होते थे और मैं उन्हें संकेतों में नहीं समझा पाती थी, तो बेकी परेशान होकर रोने लगती थी, पर फिर भी वो उस खेल को खेलना चाहती थी. तब मेरे दोस्त बहुत गुस्सा होते थे. "उसे खेल से बाहर निकालो," वे कहते थे, "वो खेल में बहुत गड़बड़ कर रही है."

"माँ के पास घर जाओ," अंत में मैं बेकी से कहती थी.

"नहीं!" वो वापिस खेलता चाहती थी. "मैं खेलना चाहती हूँ!" वो जोर से रोती थी. फिर या मैं उसे घर ले जाती थी, या फिर माँ लड़ाई सुनकर बाहर आतीं थीं और उसे ले जाती थीं.

चूँकि बेकी सुन नहीं सकती थी, इसलिए वो अपनी आवाज़ भी नहीं सुन पाती थी. वो कभी-कभी तेज आवाजें करती थी. लेकिन उसे इस बात का बिल्कुल पता नहीं होता है कि वो ऐसा कर रही है.

एक दिन हम पुस्तकालय में थे - पिताजी, बेकी और मैं. तब बेकी ने बैसाखी पर एक आदमी को आते देखा. उसे देखकर वो इतनी उत्सुक हुई कि वो उसकी ओर इशारे करने लगी.

"क्या उस आदमी को चोट लगी है?" उसने इशारे से पूछा. फिर उसने जोर-जोर से चीखने-चिल्लाने की आवाजें कीं. पूरी लाइब्रेरी में लोग उसे घूरने लगे. "चुप!" कहने से कोई फायदा नहीं हुआ क्योंकि बेकी को यह पता ही नहीं था कि वो आवाज कर रही थी.

मेरे पिताजी ने उस आदमी को समझाया, और फिर हम वहां से चल दिए. हमने कार में इसके बारे में बात की.

"बेकी और भी बहुत कुछ कहना चाहती थी," पिताजी ने कहा, "वो इसलिए परेशान थी क्योंकि अपनी बात कहने के लिए उसके पास शब्द नहीं थे."
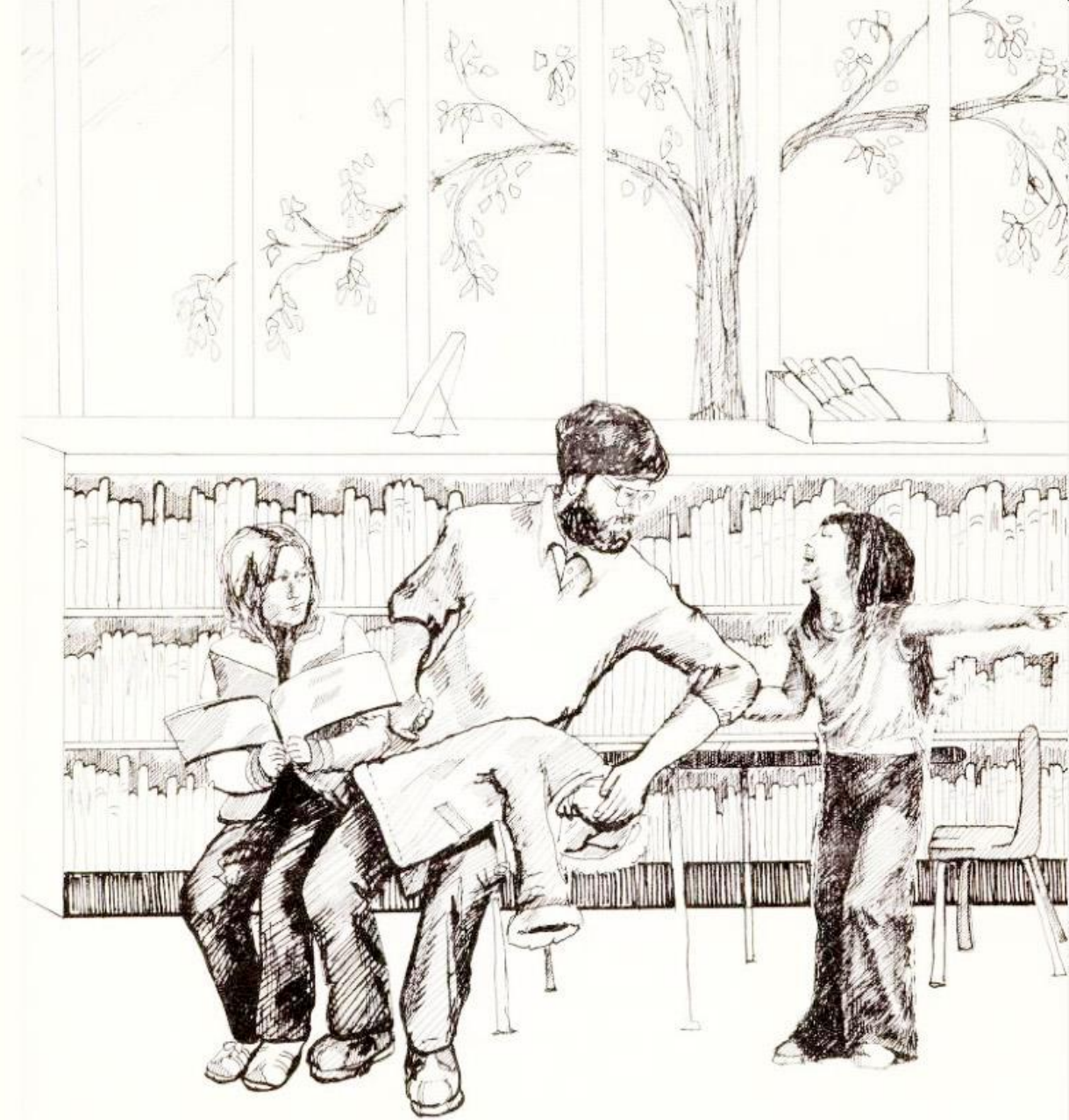
एक बार बेकी और बहुत गुस्सा हुई क्योंकि वो शॉपिंग सेंटर में हमें कुछ समझा नहीं पाई.

"मैं देखना चाहती हूँ —" उसने इशारों से कहा, और फिर वो रुक गई. वो अगले शब्द का संकेत नहीं जानती थी, या शायद वो उसकी वर्तनी नहीं कर पा रही थी. फिर वो रोई और चिल्लाई.

"पालतू जानवर की दुकान?" मेरी माँ ने इशारे से कहा.

"नहीं!" बेकी ने संकेत से बताया.

"आइसक्रीम की दुकान?" मेरी माँ ने सांकेतिक भाषा में पूछा.

"नहीं!" बेकी ने हस्ताक्षर किए. वो फिर से रोई और उसने मेरी माँ को अपने पास आने नहीं दिया.
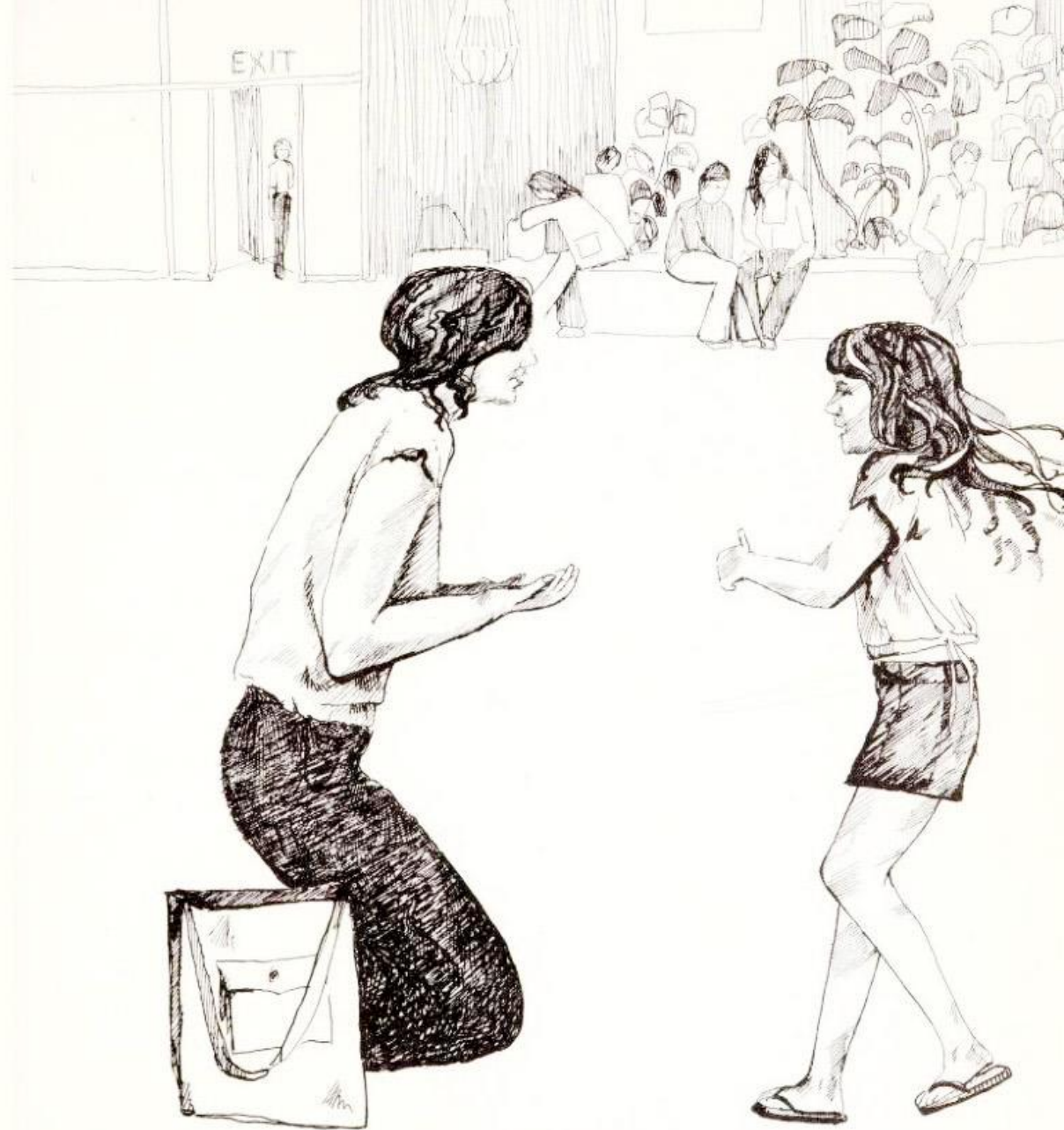
एक आदमी यह सब देख रहा था.

"उस क्रूर, बिगड़ैल बच्चे को देखो," उसने अपने बेटे से कहा.

उस आदमी की बात सुनकर मुझे बहुत गुस्सा आया.

"वो क्रूर नहीं है," मैंने कहा. "वो सुन नहीं सकती है. बस इतना ही." फिर उस आदमी का चेहरा लाल हो गया और वो वहां से तेजी से चला गया.

बाद में ऐसी वारदातें बहुत बार नहीं हुईं क्योंकि बेकी की सांकेतिक भाषा लगातार और बेहतर होती गई. इसके अलावा, हमें भी इसकी आदत हो गई थी.

एक रात मेरी माँ और मेरे बीच मेरे पियानो के पाठ को लेकर बहस हुई. स्कूल अभी शुरू ही हुआ था, इसलिए बेकी हमारे साथ वापस आ गई थी. मेरे भयानक पियानो पाठ अगले दिन शुरू होने वाले थे. मैंने अपनी माँ को बताने की कोशिश की कि मैं पियानो बजाना नहीं सीखना चाहती थी. माँ ने कहा, कि वो उसके बारे में बिल्कुल चर्चा नहीं करेंगी. मुझे कम-से-कम एक साल वो सबक और लेना होगा. उन्होंने कहा कि मुझे रोजाना आधा घंटा अभ्यास करना होगा.

मैं रोना नहीं चाहती थी, लेकिन मुझे इतना गुस्सा आया कि मैं अपना रोना रोक नहीं पाई. तभी मुझे लगा कि कोई मेरे कंधे को छू रहा था. वो बेकी थी.

"चलो ऊपर चलते हैं," उसने सांकेतिक भाषा में मुझ से कहा. उसने अपना हाथ मेरे कंधे पर रखा. हम उसके कमरे में गए और वहां मैं कुछ देर रोई. बेकी का साथ होना मुझे बहुत अच्छा लगा.

उसके कुछ समय बाद बेकी और मैंने उसके बेडरूम को वापस एक प्लेरूम में बदलने का फैसला किया. फिर मेरा कमरा, हम दोनों का बेडरूम बन गया. फिर हमने साथ-साथ खूब मस्ती की. जब हम तकियों से लड़ते थे तो माँ ने हमें रोकती थीं. जब माँ सांकेतिक भाषा में हम पर चिल्लाती थीं तो उन्हें देखना बहुत मज़ेदार लगता था!

बेकी सिर्फ एक और महीने हमारे साथ रहेगी. फिर गर्मी की छुट्टी होगी और वो अपने घर जाएगी. अगले पतझड़ में वे बधिर बच्चों के एक बोर्डिंग स्कूल में जाएगी. जब मैंने इसके बारे में सुना तो मैं बहुत दुखी हुई. पिताजी ने मुझे यह बात पिछले हफ्ते ही बताई थी जब बेकी और मैं कार धोने में उनकी मदद कर रहे थे.

"वो यहाँ क्यों नहीं रह सकती है और इसी स्कूल में जाना जारी क्यों नहीं रख सकती है?" मैंने पूछा.

मेरे पिताजी ने बेकी और मुझे साबुन के पानी की बाल्टी और एक कपड़ा दिया. "बेकी के माता-पिता का मानना है कि उसे वहां बेहतर शिक्षा मिलेगी," पिताजी ने मुझे समझाया. "लेकिन चिंता मत करना. हम हमेशा बेकी के दोस्त बने रहेंगे."

"लेकिन बेकी लगभग मेरी बहन है!" मैंने उनसे कहा.

उस रात हमारे कमरे में बेकी और मैंने सांकेतिक भाषा का उपयोग करते हुए खूब बातें कीं. मैंने सोचा कि मुझे उसकी बहुत याद आएगी. मैंने उससे कहा कि वो यहाँ वापस आकर हमसे जब चाहें मिल सकती थी. हमने इस बारे में भी बात की कि उसका नया स्कूल कैसा होगा.

फिर हमने अपने नाइटगाउन पहने और हम बिल्ली के साथ खेलने लगे. तभी माँ कमरे में आईं.

"अब सोने का समय है लड़कियों," माँ ने सांकेतिक भाषा में हमसे कहा.

फिर हम अपने बिस्तर पर आ गए और माँ ने बत्ती बुझा दी. फिर मैंने हर रात की तरह बेकी का हाथ अपने हाथ में पकड़ा.

"शुभ-रात्रि," मैंने उसके हाथ में संकेतों से लिखा. "अच्छे से सोना."

"गुड-नाईट," बेकी ने हाथ के संकेतों में जवाब दिया, "शुभ-रात्रि."

अंत